ईमानदारी का महत्व

कन्फ़्यूशियस की कहानी

लेखक : जॉनसन

ईमानदारी का महत्व

कन्फ़्यूशियस की कहानी

यह एक ईमानदार आदमी कन्फ़्यूशियस की कहानी है। यह कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। कन्फ़्यूशियस के बारे में अन्य ऐतिहासिक तथ्य अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

बहुत वर्षों पहले की बात है, कन्फ़्यूशियस नाम का एक छोटा बालक अपने माता-पिता के साथ चीन देश के "लू" प्रान्त में रहता था।

अन्य बच्चों की तरह ही कन्फ़्यूशियस को भी खेलना, नाचना, गाने गाना और हंसना अच्छा लगता था। उसे अपने माता-पिता के साथ समय बिताना भी बहुत अच्छा लगता था।

उसके माता-पिता को लगता था कि कन्फ़्यूशियस एक विलक्षण बालक है। लेकिन इसमें कोई अचरज की बात नहीं थी। माता-पिता अक्सर ही यह सोचते हैं कि उनका बच्चा कुछ ख़ास है।

लेकिन उसके पिता जिस प्रकार उससे बातचीत करते, वह अवश्य आश्चर्यजनक था।

कन्फ़्यूशियस केवल तीन वर्ष का था, जब उसके पिता ने एक दिन उसे अपने पास बुलाया।

कन्फ़्यूशियस जा कर पिता के निकट खड़ा हो गया। उसके पिता ने कहा, "मुझे विश्वास है कि बड़े होकर तुम एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति बनोगे, और अपनी समझदारी के द्वारा बहुत से लोगों की सहायता करोगे।"

उसके पिता यह देख रहे थे कि कन्फ़्यूशियस को कुछ समझ नहीं आया, और वे मुस्कुराए। "तुम अभी बहुत छोटे हो," उन्होंने कहा, "लेकिन जब तुम मेरी बात पर गंभीरता से सोचोगे, तब तुम्हें समझ आएगा।"

कन्फ़्यूशियस ने इस बारे में सोचा, और निश्चय किया कि जब वह कुछ बड़ा हो जायेगा, अपने पिता से बुद्धिमत्ता के बारे में विस्तार से समझाने को कहेगा। लेकिन वह ऐसा कर पाता, इसके पहले ही उसके वृद्ध पिता बीमार पड़े, और उनकी मृत्यु हो गई।
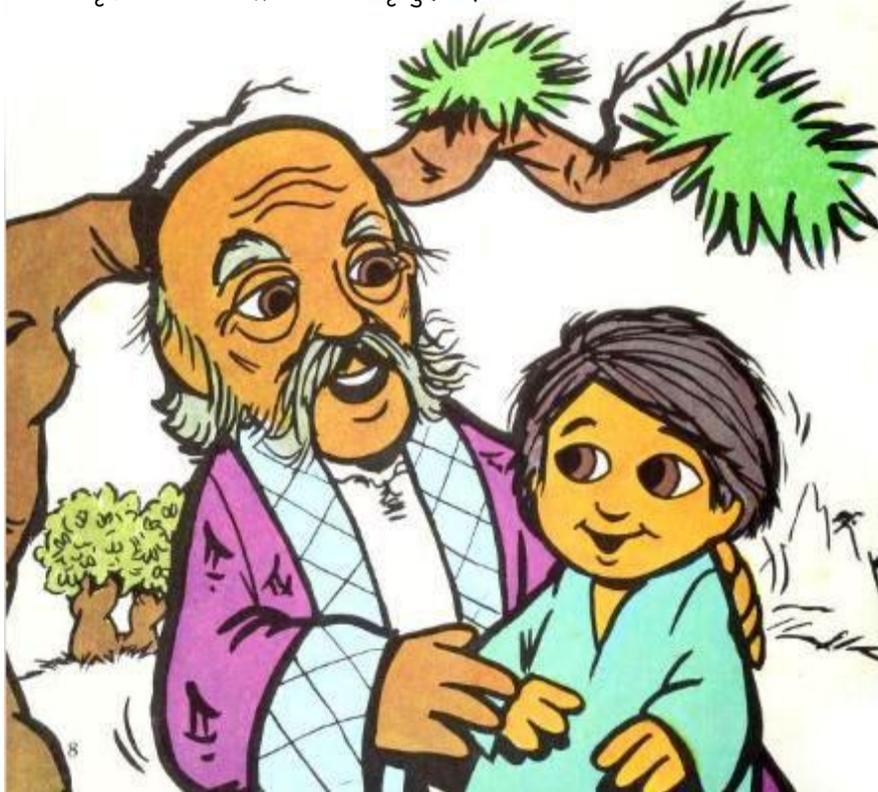
"मुझे पिताजी की बहुत याद आती है," उसने अपनी माँ से कहा, "और मैं जानना चाहता हूँ कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा था, कि मैं बड़ा होकर एक बुद्धिमान व्यक्ति बनूँगा," कन्फ़्यूशियस ने कहा।

"शायद उन्होंने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि वे तुमसे बहुत प्रेम करते थे," माँ ने कहा। "और शायद उन्हें लगता था कि यदि तुम इस बात पर विश्वास कर लोगे, तो इसे सच भी कर दिखाओगे।"

"लेकिन मैं भला इसे कैसे सच कर सकता हूँ?" नन्हे कन्फ़्यूशियस ने पूछा। "मुझे तो यह भी नहीं पता कि बुद्धिमान व्यक्ति होने का अर्थ क्या है।"

कन्फ़्यूशियस बैठा-बैठा इस बारे में सोचता रहा।

और फिर अचानक कुछ हुआ।

अचानक उसे लगा कि उसके वृद्ध पिता, जैसे जादुई रूप से, उसकी आँखों के सामने आ खड़े हुए। वह एकदम छोटे से थे, केवल छः इंच ऊँचे।

"मेरे नन्हे दोस्त, तुम कुछ परेशान लग रहे हो," उसे छोटे से आदमी ने कहा।

कन्फ़्यूशियस हंसने लगा। उसे अच्छी तरह पता था कि छः इंच ऊंचे इंसान असल ज़िन्दगी में नहीं हुआ करते। इस छोटे से व्यक्ति को उसकी अपनी कल्पना ने ही निर्मित किया था। लेकिन कन्फ़्यूशियस बुद्धिमत्ता की गुत्थी में उलझा हुआ था, और इस विषय में किसी से वार्तालाप करने का विचार उसे अच्छा लगा, फिर भला वह वार्तालाप स्वयं से ही क्यों न हो।

"हैलो, नन्हे बुज़ुर्ग", कन्फ़्यूशियस ने कहा।

"तुम मुझे साधु कह कर बुला सकते हो," छोटे आदमी ने कहा।

"साधु?", कन्फ़्यूशियस ने जवाब दिया। "बड़ा अजीब सा नाम है।"

"नहीं, नहीं,", छोटे आदमी ने कहा। "बहुत बुद्धिमान व्यक्तियों को अक्सर साधु कह कर बुलाया जाता है, और मैं वास्तव में एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हूँ।"

कन्फ़्यूशियस की आँखों में चमक आ गई। "तुम बुद्धिमान हो? अति उत्तम ! क्या तुम मुझे भी सिखा सकते हो कि बुद्धिमान कैसे बना जाता है ?"

"उससे भी अच्छा, मेरे दोस्त," छोटा आदमी बोला, "मैं तुम्हारी मदद करूँगा, जिससे तुम खुद यह सीख सको।"

"मैं तैयार हूँ !", कन्फ़्यूशियस बोला, "तो सबसे पहले मुझे क्या करना होगा?"

"प्रारम्भ में तुम्हें वह सीखना होगा जो औरों को पहले ही पता है," साधु ने कहा। "ऐसा तुम अच्छी पुस्तकें पढ़ कर कर सकते हो।"

कन्फ़्यूशियस के समय में पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं, बांस की पतली खपच्चियों पर, जिनको चमड़े के तस्मे से बांध दिया जाता था। अपने पिता की भविष्यवाणी के अनुरूप, कन्फ़्यूशियस बुद्धिमान बनने लिए इतना अधीर था, कि वह अपनी पुस्तकों को बार-बार पढता। बेचारी उसकी माँ उन किताबों के घिसे हुए तस्मों को बार-बार बदलती रहती।

"पढ़ते रहना एक बहुत अच्छा तरीका है, बुद्धिमान बनने का", साधु ने कहा, "लेकिन सारी बुद्धिमत्ता किताबों में नहीं मिलती। तुम दूसरे लोगों को देख और सुन कर भी बहुत कुछ सीख सकते हो। यह समझने की कोशिश करो, कि वे क्या सोच रहे हैं, और महसूस कर रहे हैं। अगर लोग तुम्हें न भी बताएं, उन्हें ध्यानपूर्वक देखने से तुम जान सकते हो कि वे क्या महसूस कर रहे हैं।"

कन्फ़्यूशियस ने साधु की सीख पर अमल किया, और उसने पाया कि वाक़ई वह औरों को देखने और सुनने से बहुत कुछ सीख सकता था।

"शायद मैं बुद्धिमान बनने की राह पर कुछ प्रगति कर रहा हूँ," कन्फ़्यूशियस ने सोचा।

कन्फ़्यूशियस अपनी उम्र के अन्य बच्चों के मुकाबले बुद्धिमान अवश्य था, लेकिन उसके पास धन बहुत कम था। उसने बहुत छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था, और सबसे पहला काम जो उसे मिला, वह था जानवरों की देखभाल करने का।

"तुम इस काम में बहुत अच्छे हो," एक दिन साधु ने कहा, जब कन्फ़्यूशियस कुछ समय यह काम कर चुका था, "सभी जानवर कितने स्वस्थ दिखाई दे रहे हैं, और उनकी संख्या में कितनी बढ़त हुई है, जबसे तुमने उनकी देखभाल शुरू की है। तुम इतना अच्छा कैसे कर लेते हो, मेरे नन्हे दोस्त !"

"बड़ी आसानी से," कन्फ़्यूशियस ने कहा, "मैं जानवरों को समय पर भोजन देता हूँ, उनके साथ दौड़ता-भागता हूँ, और उनकी देखभाल ठीक वैसे ही करता हूँ, जैसी कि मैं अपने लिए चाहता, अगर मैं स्वयं भी जानवर होता।"
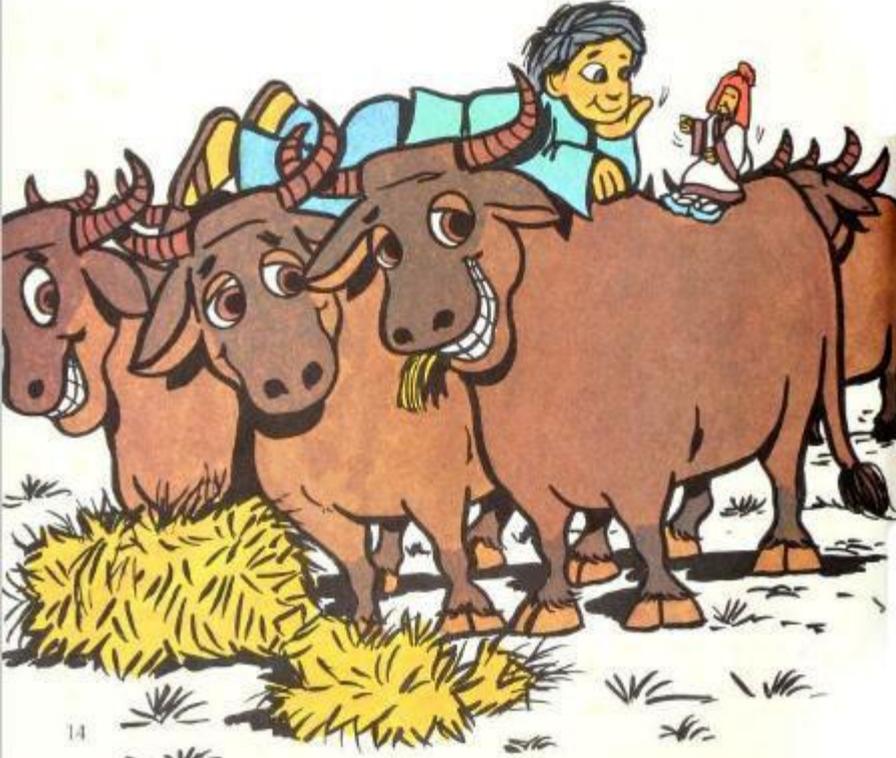
जानवरों के झुण्ड में यह बदलाव केवल साधु को दिखाई दे रहा हो, ऐसा नहीं था। जानवरों का मालिक कन्फ़्यूशियस के काम से इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने कन्फ़्यूशियस को और बड़ी ज़िम्मेदारी दे दी।

"अब तुम अनाज को तौल कर बोरियों में भरो," उसने कन्फ़्यूशियस से कहा, "और फिर ये बोरियां शहर के लोगों को बेचने का काम करो।"

"तुम अपने लिए कुछ अधिक पैसे बना सकते हो," बाजार में अनाज बेचने वाले एक अन्य आदमी ने उससे कहा। "बस बोरियों में अनाज भरते समय थोड़ा कम तौला करो। किसी को पता भी नहीं चलेगा।"

लेकिन यह तो बेईमानी होगी," कन्फ़्यूशियस ने कहा। "जब मैं नहीं चाहता कि दूसरे लोग मेरे साथ बेईमानी करें, तो मैं दूसरों के साथ ऐसा कैसे कर सकता हूँ।"

जो लोग उसके पास अनाज खरीदने आते, वे कहते, "यह नन्हा कन्फ़्यूशियस बहुत ईमानदार है। वह हमसे जितना मूल्य लेता है, उतना ही अनाज देता है।"

"ईमानदार व्यक्ति तो मेरे लिए बहुत काम का है," एक नज़दीकी दूकानदार ने कहा, और उसने कन्फ़्यूशियस को अपनी दुकान का काम-काज सँभालने का प्रस्ताव दिया।

"यह तो बहुत अच्छा है," कन्फ़्यूशियस ने साधु से कहा। "इस प्रकार मैं बहुत से लोगों को देख-सुन सकूंगा, और अधिक सीख सकूंगा।"

"बिलकुल ठीक," साधु ने कहा, "लेकिन यह मत भूलना कि दूसरे लोग भी तुम्हें देख रहे होंगे।"

कन्फ़्यूशियस यह बात बिलकुल नहीं भूला। वह ग्राहकों के साथ वैसा ही बर्ताव करता जैसा वह स्वयं के लिए चाहता था, और वह हमेशा उन्हें पूरे पैसे वापस करता।

"वह बड़ा ईमानदार इंसान है," लोग कहते। "और वह बुद्धिमान भी है। जब उसे दुकान में और काम नहीं होता, तो वह पुस्तक पढता रहता है। इस नन्हे से इंसान को बहुत कुछ पता है।"

कन्फ़्यूशियस की ख्याति बढ़ती ही गई, और फिर एक दिन एक धनी व्यक्ति उसकी दुकान में आया, और उसने कन्फ़्यूशियस से अपने बेटे को पढ़ाने का प्रस्ताव रखा।

"मैं तुम्हारी ईमानदारी और बुद्धिमानी से बहुत प्रभावित हूँ," उस आदमी ने कहा। "मैं चाहता हूँ कि मेरा पुत्र भी वह सब सीखे जो तुम्हें आता है।"

आपको क्या लगता है? कन्फ़्यूशियस ने इस बात का क्या उत्तर दिया होगा ?
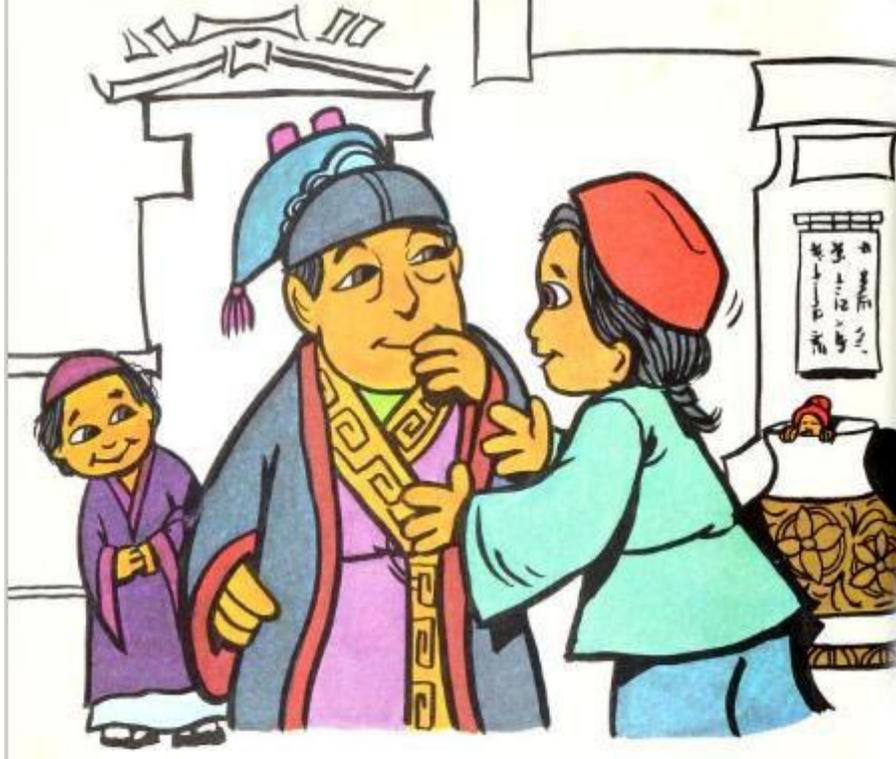
निश्चय ही, वह शिक्षक बनने के लिए तुरंत तैयार हो गया। और वह इतना अच्छा शिक्षक बन गया, कि जल्दी ही उसे अनेक छात्र मिल गए।

"मैं एक स्कूल खोलूंगा," उसने साधु से कहा, "लेकिन मैं न्यायोचित कार्य करना चाहता हूँ। मैं केवल धनी लोगों के बच्चों को ही नहीं पढ़ाऊंगा। मैं उन सभी को पढ़ाऊंगा जो पढ़ना चाहते है, गरीबों के बच्चों को भी। और मेरे पास एक योजना है, जिससे मैं यह कर सकूँ।“

फिर कन्फ़्यूशियस सभी धनी छात्रों के पिताओं के पास गया, "आपको अपने पुत्र की शिक्षा के लिए अधिक धन देना होगा" उसने कहा। "इस प्रकार मैं निर्धन छात्रों को बिना पैसा लिए पढ़ा पाऊँगा। अब आप मुझे ईमानदारी से बतलायें कि आपके पास कितना धन है, और फिर मैं आपको बतलाऊंगा कि आपको अपने पुत्र की शिक्षा के लिए कितना पैसा देना है।"

धनवान लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्हें समझ नहीं आया कि आखिर निर्धन लोगों के बच्चों को शिक्षा की क्या आवश्यकता है। लेकिन वे अवश्य चाहते थे कि उनके अपने बच्चे कन्फ़्यूशियस से शिक्षा ग्रहण करें। इसलिए, एक-एक करके उन सभी ने कन्फ़्यूशियस को बता दिया कि उनके पास कितना पैसा है।

निर्धन छात्रों के पिताओं ने भी कन्फ़्यूशियस को यह बताया, हालाँकि उनमें से कुछ को अपने अति-निर्धन होने की बात स्वीकार करने में बड़ी लज्जा महसूस हो रही थी।

फिर कन्फ़्यूशियस ने हर पिता को बताया कि उसे कितना पैसा देना है, और अंततः इस प्रकार स्कूल प्रारम्भ हो गया। स्कूल में केवल लड़के ही थे, क्योंकि उन दिनों लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने की इजाज़त नहीं थी।

और आपको क्या लगता है? भला कन्फ़्यूशियस ने इन छात्रों को सबसे पहला पाठ क्या पढ़ाया होगा?

यह पाठ था दो अत्यंत महत्वपूर्ण शब्दों के बारे में।

"तुम में से कितने लोगों ने सुना था, जब तुम्हारे पिताओं ने अपनी संपत्ति के बारे में मेरे प्रश्न का उत्तर दिया था ?", कन्फ़्यूशियस ने छात्रों से पूछा।

अनेक निर्धन और धनी छात्रों ने अपने हाथ उठा दिये। उस राज्य के शक्तिशाली शासक का पुत्र भी उस कक्षा में था, और उसने भी अपना हाथ उठाया।

"मेरे प्रश्न का उत्तर देने से पहले तुम्हारे पिताओं के लिये क्या करना आवश्यक था ?", कन्फ़्यूशियस ने अपनी शांत आवाज़ में उनसे पूछा। "मेरे साथ ईमानदार होने से पहले उनका किसके साथ ईमानदार होना आवश्यक था?"

छात्र इस विषय में सोचने लगे, और फिर उनमें से एक ने कहा, "उन्हें स्वयं से ईमानदार होना आवश्यक था।"

"हाँ, तुमने बिलकुल सही कहा," कन्फ़्यूशियस प्रसन्न होकर बोला। फिर उसने एक और प्रश्न पूछा। आखिर यही तो उसका शिक्षा देने का तरीका था - प्रश्न पूछ-पूछ कर।

"यदि मैं तुमसे कहूं कि सत्यनिष्ठा पहले आती है, और ईमानदारी बाद में, और दोनों ही शब्दों का अर्थ है सत्य का पालन करना, तो क्या तुम मुझे बता सकते हो कि इन दोनों शब्दों का क्या अर्थ है?"

साधु मुस्कुराया, क्योंकि उसे कन्फ़्यूशियस के प्रश्न का उत्तर मालूम था। क्या तुम्हें भी पता है वह उत्तर?

स्कूल के छात्रों को इस विषय में सोचना पड़ा। कुछ क्षण बाद एक छात्र ने, वही जो लू के शासक का पुत्र था, अपना हाथ उठाया, "मेरे विचार से सत्यनिष्ठा का अर्थ है स्वयं से सच बोलना। और ईमानदारी का अर्थ है दूसरों से सच बोलना।"

"बिलकुल ठीक," कन्फ़्यूशियस ने प्रसन्न होकर कहा। "इन शब्दों का ठीक यही अर्थ है। यदि तुम्हारे पिताओं में से कुछ अपनी संपत्ति के बारे में मुझसे सच नहीं बोलते, तो मुझे पता नहीं चलता। लेकिन उन्हें अवश्य यह ज्ञात रहता कि उन्होंने सत्यनिष्ठा का पालन नहीं किया है, और इस कारण शायद उनका सुख-चैन भंग हो जाता।"
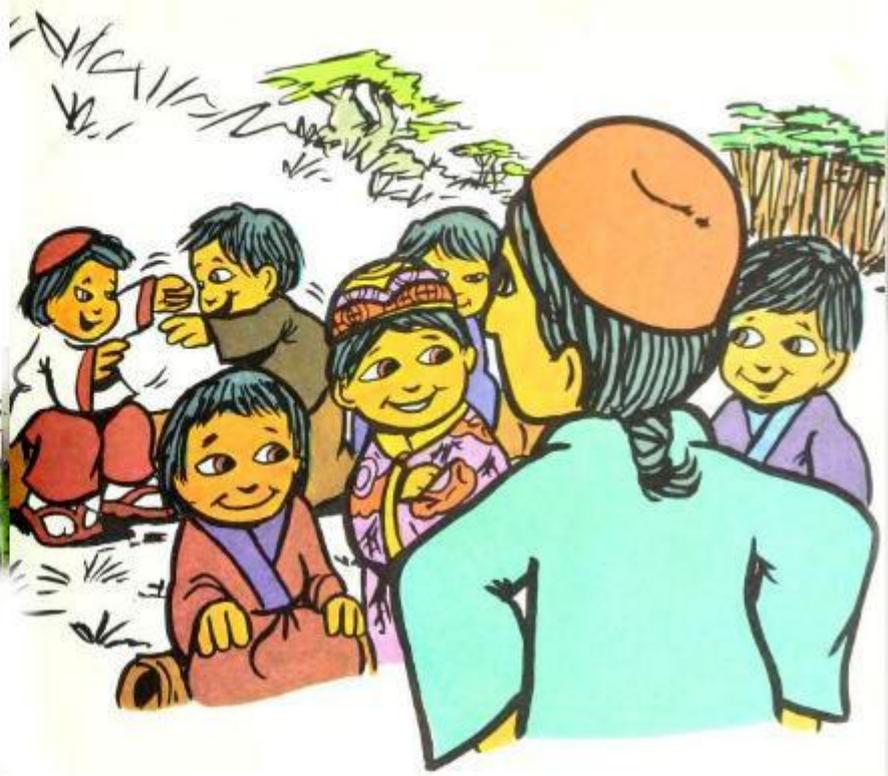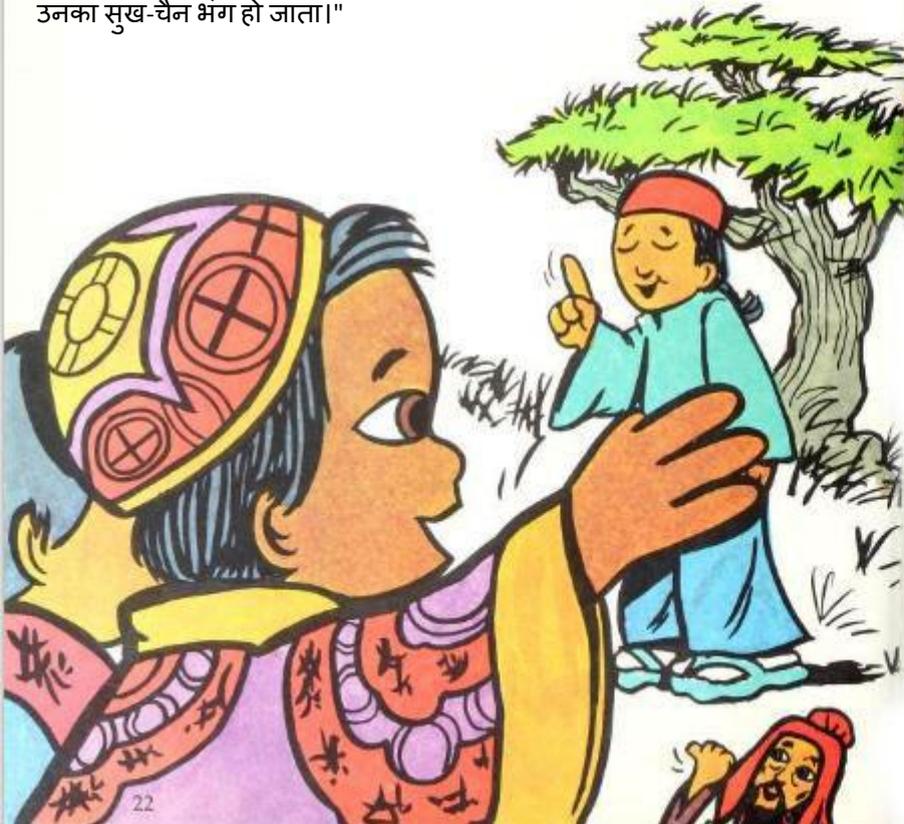
फिर कन्फ़्यूशियस ने देखा कि कक्षा में सबसे पीछे बैठे दो छात्र उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहे थे। उसने उनकी ओर तिरछी निगाह से देखा, लेकिन उन्हें डांटा नहीं, न ही उनसे ऊँची आवाज़ में बोला। बल्कि बहुत शांतिपूर्वक उसने उन छात्रों को कक्षा से चले जाने को कहा। "जो कोई भी विद्या ग्रहण करना चाहता है, मैं उसे अवश्य पढ़ाऊंगा", उसने कहा, "लेकिन मैं किसी को अपनी बात सुनने के लिए बाध्य नहीं कर सकता।"

दोनों छात्र कक्षा से चले गये, और इसलिए वे नहीं जान पाए कि उसके बाद क्या हुआ।

कन्फ़्यूशियस जानता था कि अधिकांश लोग किसी उदहारण की सहायता से बात को जल्दी समझ पाते हैं। इसलिए वह कक्षा के सम्मुख गया।

उसने फुसफुसा कर साधु से कहा, "अब यह देखो"। फिर उसने एक फूलदान अपने एक हाथ में पकड़ा, जिससे कि सभी छात्र उसे देख सकें। उसके दूसरे हाथ में एक सेब था। सभी छात्रों के सामने उसने वह सेब उस फूलदान में डाल दिया, और उसे फर्श पर रख दिया।

"तुममें से जो भी सेब को फूलदान से बाहर निकाल सकता है, सेब उसी को मिल जायेगा", उसने कहा।
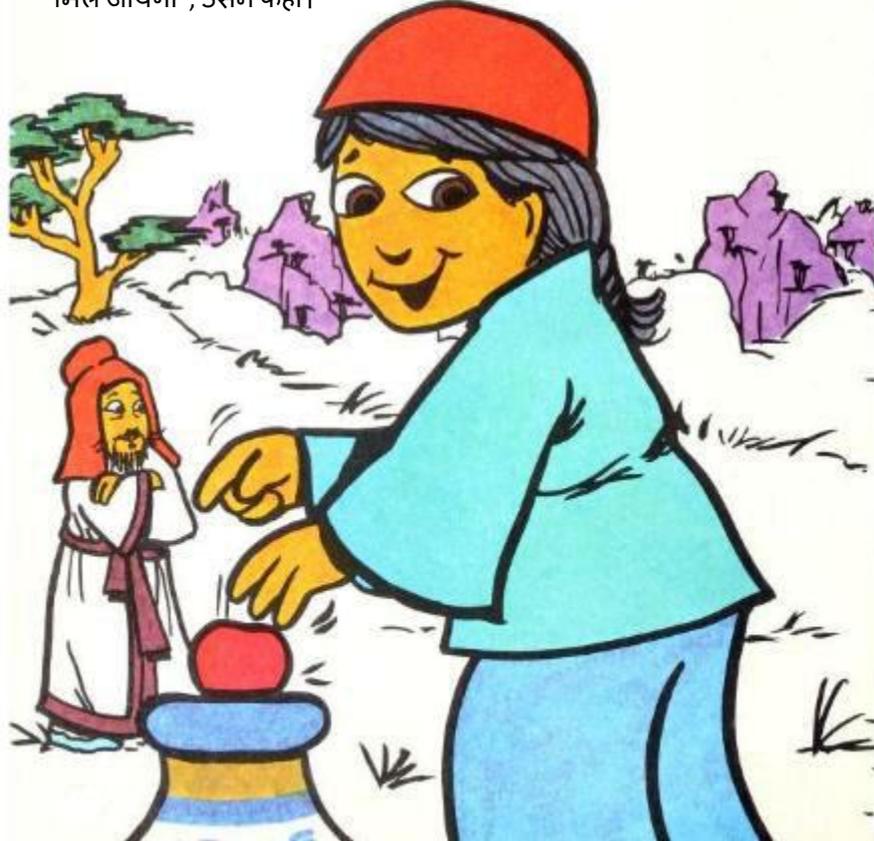
एक छात्र जिसे बड़ी भूख लगी थी, तेज़ी से आगे आया, और उसने फूलदान के संकरे मुंह में हाथ डाल दिया। उसने सेब को मुट्ठी में भींच लिया, और उसे खींचने लगा, लेकिन बाहर न निकाल सका।

"मेरा हाथ फँस गया," वह चिल्लाया।

"तुम सेब को बाहर नहीं निकाल पाओगे, जब तक उसे छोड़ोगे नहीं," कन्फ़्यूशियस ने कहा।

वह सेब को छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन अंत में उसे छोड़ना ही पड़ा। अपना हाथ फूलदान से बाहर निकाल कर वह विमूढ़ सा इधर-उधर देखने लगा।

क्या तुम सेब को फूलदान से बाहर निकलने का कोई उपाय सोच सकते हो?

कन्फ़्यूशियस ने फूलदान को उठा कर उल्टा कर दिया। सेब निकल कर उसके हाथ में आ गिरा। सभी छात्र हंसने लगे। यह कितना आसान काम था।

"लेकिन यह इतना आसान नहीं है, जितना दिखता है," अपने हाथ में पकडे सेब को ऊपर उठा कर कन्फ़्यूशियस ने कहा। "किसी चीज़ को छोड़ पाना अक्सर बड़ा मुश्किल होता है। लेकिन जब यह समझ आ जाये कि उस चीज़ को पकड़ कर रखने के कारण, हम जो पाना चाहते हैं, उसे पाने में असमर्थ हैं, तो उसे छोड़ देने में ही समझदारी है। अगर आप कोई ग़लत काम कर रहे हैं, तो उसे बंद कर देना ही अच्छा है। अगर आप स्वयं से या दूसरों के साथ ईमानदार नहीं हैं, तो इस बेईमानी को छोड़ देना ही अच्छा है। तब ही आप अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।"

"मैं ने पहले कभी किसी को इस प्रकार सिखाते हुए नहीं देखा," साधु ने कन्फ़्यूशियस के कान में फुसफुसा कर कहा। "तुम्हारे पिता ने तुम्हारे विषय में जो भविष्यवाणी की थी वह सच साबित होती दीख रही है। मुझे पूरा विश्वास है।"
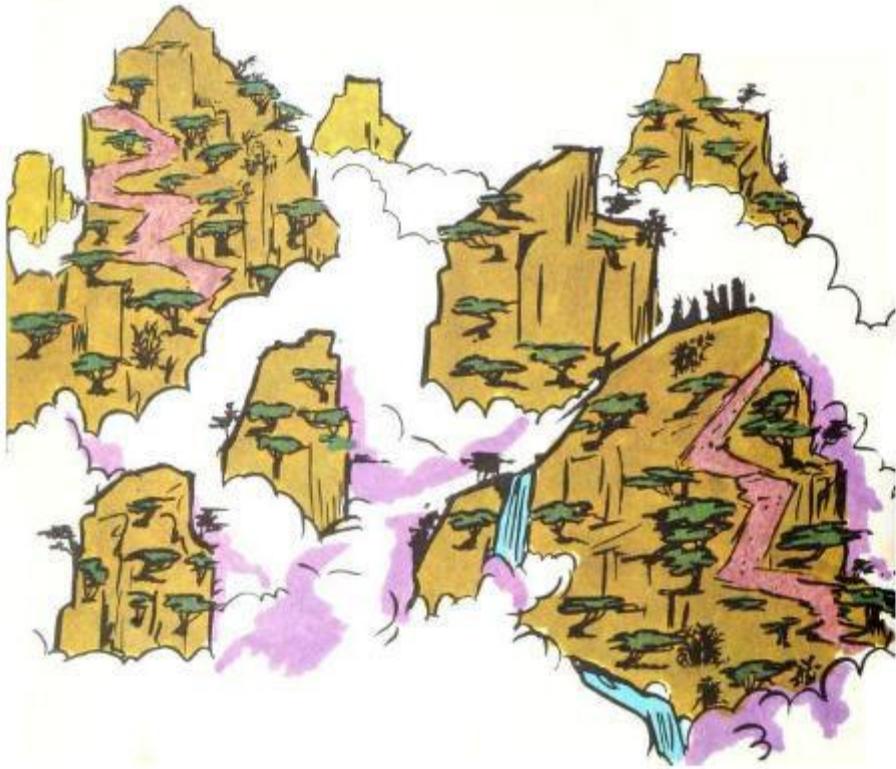
जल्दी ही बहुत से लोग कन्फ़्यूशियस को एक कुशल अध्यापक मानने लगे, और वे सभी बच्चे नहीं थे। इनमे कुछ दूर-दराज़ जंगलों में रहते थे, जहाँ कोई स्कूल नहीं थे। जब कन्फ़्यूशियस को ऐसे लोगों के बारे में पता चलता, वह उनके पास जाता, और उन्हें बुद्धिमानी, नैतिकता और ईमानदारी के विषय में बतलाता।

उन दिनों अधिकांश लोग पैदल ही यात्रा करते थे, इसलिए कन्फ़्यूशियस भी मीलों पैदल चलता था। क्योंकि इसमें बहुत समय लगता था, कन्फ़्यूशियस ने तय किया कि वह यात्रा के दौरान भी लोगों को पढ़ायेगा। स्वाभाविक है कि जो लोग उससे सीखने के लिए उसके साथ यात्रा पर जाते, वे उसके अनुयायी कहलाने लगे।

बहुधा कन्फ़्यूशियस की यात्रा के मार्ग शांत और सुरक्षित होते थे। लेकिन एक दिन जब वह जा रहा था, उसने करीब के जंगल से जोर से गुर्राने की भयावह आवाज़ें आती सुनीं।

"देखो," साधु ने चिल्ला कर कहा। वह एक वृद्ध औरत की ओर इशारा कर रहा था, जो एक नौजवान के मृत शरीर के पास बैठी बिलख-बिलख कर रो रही थी।

"सावधान," उसका एक अनुयायी चिल्लाया, "मैंने अभी-अभी एक बाघ को जंगल में जाते देखा है।"

तुम्हें क्या लगता है, फिर क्या हुआ होगा?
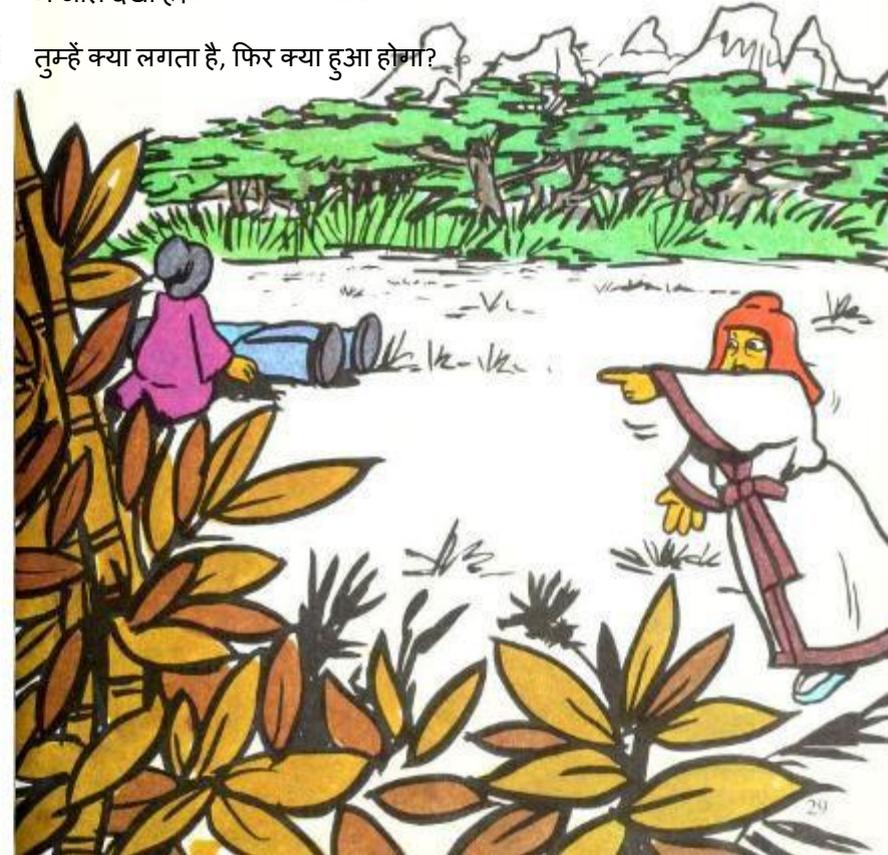
"उसने मेरे बेटे को मार डाला," एक वृद्ध औरत रो रही थी। "बाघ ने मेरे बेटे को मार दिया," वह दुःख भरे शब्दों में सुबक-सुबक कर कह रही थी। "ठीक इसी जगह पर एक बाघ ने मेरे पति को भी मार डाला था। और उसके पहले मेरे पिता को भी एक बाघ ने मारा था।"

"लेकिन तुम ऐसे स्थान पर रहती ही क्यों हो?", कन्फ़्यूशियस ने उस महिला से पूछा। "तुम्हें उस बाघ के प्रति भय और घृणा नहीं लगती जिसने तुम्हारे प्रियजनों को मार डाला?"
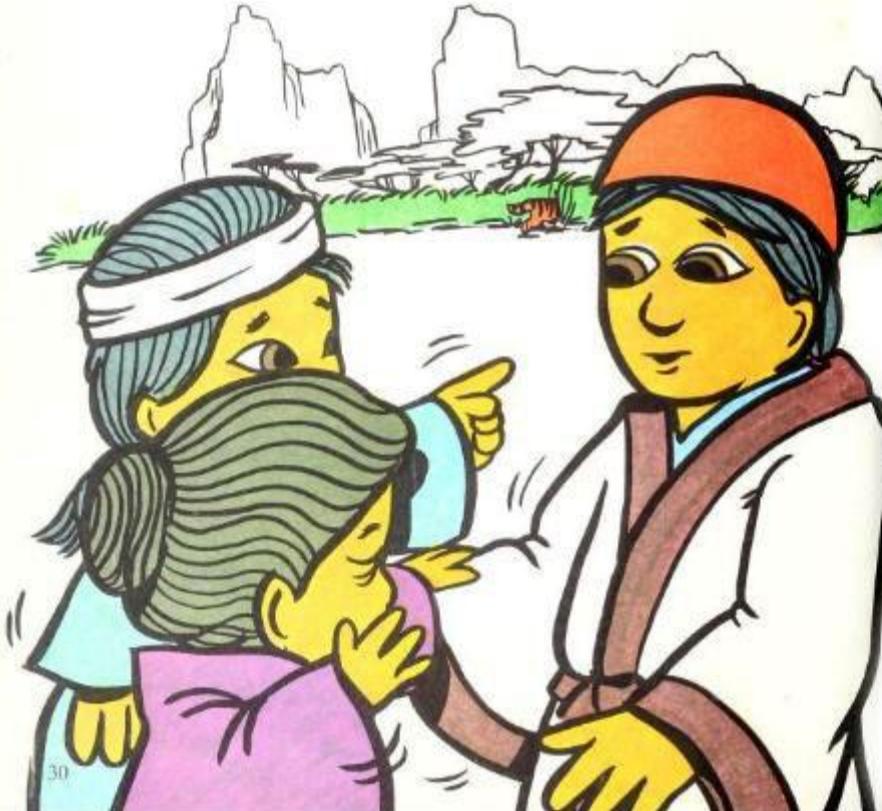
उस महिला ने हामी भरी,"अवश्य मैं बाघ से डरती हूँ। लेकिन मैं कहीं और चली जाऊं तो उसके बाद क्या होगा, इस बात से मुझे और भी अधिक डर लगता है। कम से कम यहाँ के लोग दयालु और ईमानदार हैं।"

"ठीक है," कन्फ़्यूशियस ने कहा, और फिर उस महिला के जाने के बाद अपने अनुयायियों से बोला, "जो कुछ तुमने अभी- अभी देखा है, इस विषय में विचार करो। और फिर अपने आप से पूछो, लोग खूंखार पशुओं से अधिक डरते है, या फिर दुष्ट और बेईमान लोगों से?"

अधिकांश अच्छे शिक्षकों की ही तरह कन्फ़्यूशियस एक अच्छा विद्यार्थी भी था। इसलिए साधु ने, जो और कोई नहीं कन्फ़्यूशियस की अपनी अंतरात्मा ही था, जब उसे सुझाव दिया कि उसे लोयांग शहर को जाकर वहां के प्रसिद्ध पुस्तकालय में अध्ययन करना चाहिए, तो उसने ऐसा ही किया।

उन दिनों चीन बहुत से राज्यों में विभाजित था, और प्रत्येक राज्य का अलग शासक होता था, जिसे ड्यूक कहा जाता था। कन्फ़्यूशियस ने लू के शासक से लोयांग जाने के लिए मदद मांगी, क्योंकि वह लू से बहुत दूर था। शासक ने उसे एक गाडी प्रदान की, और वह अपने दो अनुयायियों को साथ लेकर चल पड़ा।

"अब तुम चैन से अध्ययन और चिंतन-मनन कर सकते हो," साधु ने कहा, "और एक अधिक बुद्धिमान व्यक्ति बन सकते हो।"

कन्फ़्यूशियस ने कई वर्षों तक लोयांग में रह कर अध्ययन कार्य किया। वहां के उत्कृष्ट पुस्तकालय में उसने बहुत सी पुस्तकें पढ़ीं। उसने एक वाद्य बजाना भी सीखा, और ३०० से भी अधिक गीत गाने सीखे।

"मेरे दोस्त, इतना अध्ययन करके और संगीत का आनंद लेकर तुमने बहुत समझदारी का काम किया है," साधु ने कहा, "ऐसा करना कितना शांतिदायक होता है।"

"अवश्य," कन्फ़्यूशियस ने कहा। "नया संगीत सीखना शुरू में मुश्किल ज़रूर होता है। लेकिन एक बार सीख लेने के बाद उससे मुझे बड़ी सुख-शांति मिलती है।"

कुछ समय बाद कन्फ़्यूशियस अपने शहर लू को वापस चल दिया। स्वाभाविक है कि उसके साथ साधु और उसके दोनों अनुयायी, जो अध्ययन के लिये लोयांग आये थे, भी वापस चल दिए। तीनों व्यक्ति कई दिनों तक यात्रा करते रहे और अंततः एक ऐसे शहर को पहुंचे जिससे कन्फ़्यूशियस भली भांति परिचित था।

वे शहर की बाहरी दीवार के बाहर आराम करने के लिए रुके, तभी कन्फ़्यूशियस ने दीवार में एक बड़े छेद की ओर इशारा करके कहा, "पिछली बार जब मैं इस शहर को आया था, तो इसी छेद से होकर शहर के अंदर गया था।"

उस शहर के कई निवासी आसपास खड़े थे, और यह बात सुनकर वे चौंके। उनमें से एक ने कहा, "एक बार यांग-हो नाम के एक दुष्ट व्यक्ति ने इस छेद से शहर में प्रवेश किया था।"

"यह अजनबी उस यांग-हो जैसा ही दिखाई देता है," दूसरा बोला।

फिर उन लोगों जल्दी से जाकर पुलिस को खबर दी कि यांग-हो नाम का दुष्ट अपराधी शहर की दीवार के समीप विश्राम कर रहा है, और उसे गिरफ्तार करके उसके अपराधों की सजा दी जानी चाहिए।

जब कन्फ़्यूशियस विश्राम कर रहा था, पुलिस ने आकर उसे घेर लिया।

जानते हो, फिर क्या हुआ?

पुलिस ने कन्फ़्यूशियस को गिरफ्तार करके जेल की अँधेरी कोठरी में डाल दिया।

पहले तो कन्फ़्यूशियस बहुत घबराया। वह बिलकुल अकेला महसूस कर रहा था। लेकिन फिर उसने खुद को याद दिलाया कि वह अकेला नहीं था। साधु उसके साथ था, जो कि हमेशा उससे सुखकर बातें ही किया करता था, क्योंकि वह और कोई नहीं बल्कि कन्फ़्यूशियस के अपने अच्छे विचारों का ही प्रतिरूप था। लेकिन फिर भी उसे जेल में बहुत बेचैनी हो रही थी।

"काश यांग-हो ने यह सीखा होता कि उसे दूसरों के साथ ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए जो वह स्वयं के लिए नहीं चाहता," कन्फ़्यूशियस ने कहा। "यदि उसने ऐसा किया होता, तो आज मैं इस जेल में न होता।"

"तुम यहाँ अधिक समय नहीं रहोगे," साधु ने उसे सान्त्वना दिया।

बेशक, कन्फ़्यूशियस के अनुयायी दौड़ कर लू को गए, और सब लोगों को बताया कि महान शिक्षक कन्फ़्यूशियस जेल में थे। अनेक लोग जो कन्फ़्यूशियस से परिचित थे, शीघ्रता से जेल गए, और गवाही दी कि कन्फ़्यूशियस एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, जिसके साथ सम्मानजनक व्यवहार होना चाहिए। फिर क्या था, पुलिस ने तुरंत ही कन्फ़्यूशियस को आज़ाद कर दिया।

"तो इस घटना से तुमने क्या सीखा?," वहां से घर की ओर चलने के बाद कन्फ़्यूशियस ने अपने अनुयायियों से पूछा।

एक नौजवान ने कहा, "जब लोग समझ जाते हैं की आपका व्यवहार अच्छा है, तो वे भी आपके साथ अच्छाई से पेश आते हैं।"

कन्फ़्यूशियस और उसके अनुयायी घर पहुँचने ही वाले थे, कि उन्होंने शाही हरकारे को अपने ओर आते देखा।

कन्फ़्यूशियस को प्रणाम करके हरकारे ने कहा, "महाशय, लू के शासक ने आपको अपने महल में बुलाया है।"

कन्फ़्यूशियस हरकारे के साथ महल जाने को तैयार हो गया। साधु भी बहुत उत्साहित था। उसे पता था कि लू का शासक पहले कन्फ़्यूशियस की कक्षा में उसका छात्र हुआ करता था। "मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है, कि आखिर वह तुमसे क्यों मिलना चाहता है," साधु ने कहा।
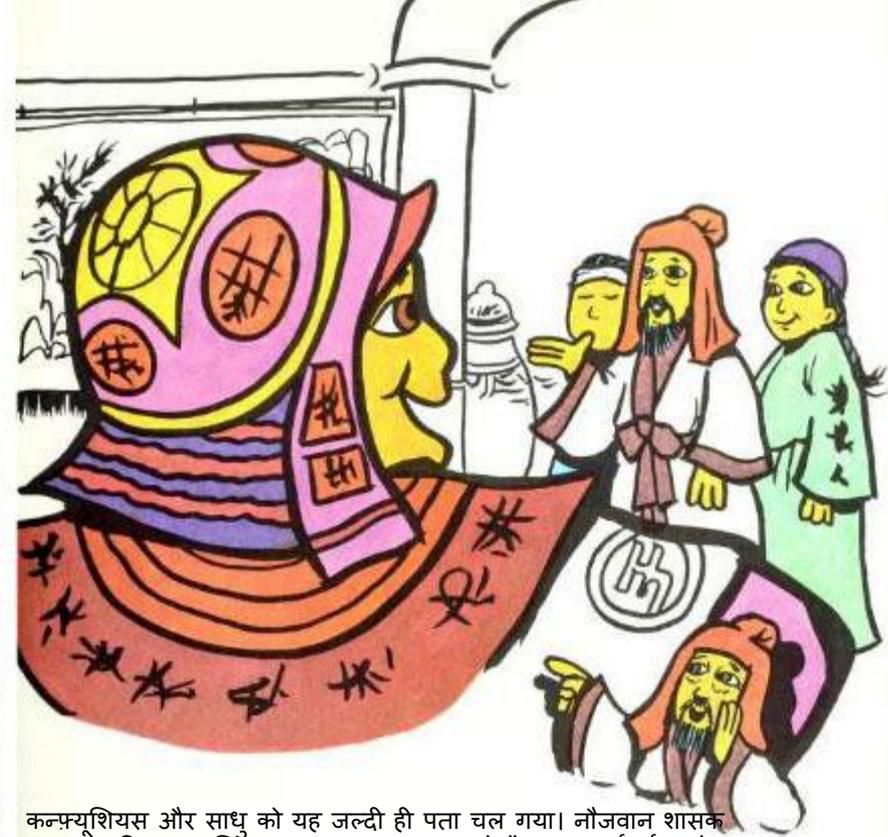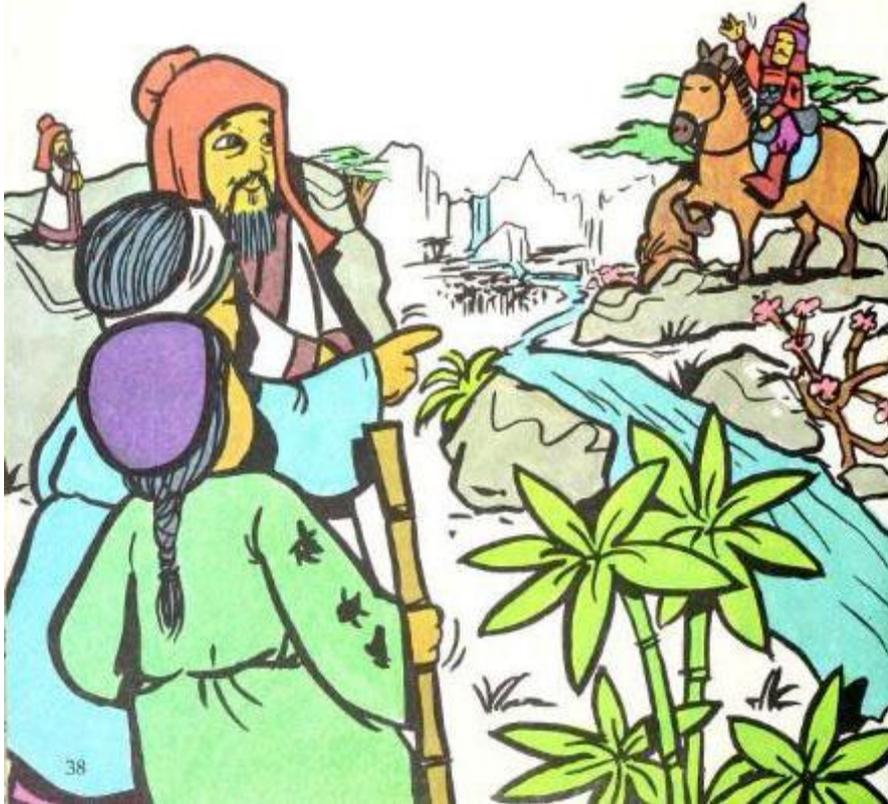
कन्फ़्यूशियस और साधु को यह जल्दी ही पता चल गया। नौजवान शासक चाहता था कि कन्फ़्यूशियस राज्य का शासन सुधारने में उसका मार्गदर्शन करे।

"मुझे ऐसा करने में बहुत प्रसन्नता होगी," कन्फ़्यूशियस ने शासक से कहा। मैं हमेशा से चाहता हूँ कि मेरे विचारों का व्यावहारिक प्रयोग किया जाये, जिससे कि मैं अधिक से अधिक लोगों की सहायता कर सकूँ।"

और फिर लू का शासक कन्फ़्यूशियस की सलाह के अनुसार ही कार्य करने लगा। वह सभी के साथ उचित और निष्कपट व्यवहार करता, और सभी लोगों के साथ आदर से पेश आता।

और जानते हो, फिर क्या हुआ?

क्योंकि उनका शासक अपनी प्रजा के साथ ईमानदारी और आदर का व्यवहार करता था, लू की जनता भी एक दूसरे के प्रति अधिक ईमानदारी से पेश आने लगी। सौदागर अपने ग्राहकों को धोखा नहीं देते थे, और मज़दूर अपना काम मेहनत से करते थे। सडकों और पुलों की देख-रेख और मरम्मत अच्छे से होती थी, जिससे लोग सुगमता से यात्रा कर सकें। अनाज की पैदावार भी बढ़ गई, और जनता के पोषण में सुधार हुआ। सब एक दुसरे से मृदुतापूर्ण व्यवहार करते थे, और इस कारण प्रसन्नचित्त रहते थे।

धीरे धीरे चोर-डाकुओं को वहाँ से भगा दिया गया, और लू एक बहुत ही सुरक्षित स्थान बन गया। अमीर-ग़रीब, बूढ़े-नौजवान, सभी को वहां के न्यायालयों में समुचित न्याय मिलता था। ईमानदारी को पुरस्कृत किया जाता था, और बेईमानों को दंड मिलता था।

ऐसे नगर में रहने में लोग सुख का अनुभव करते थे।
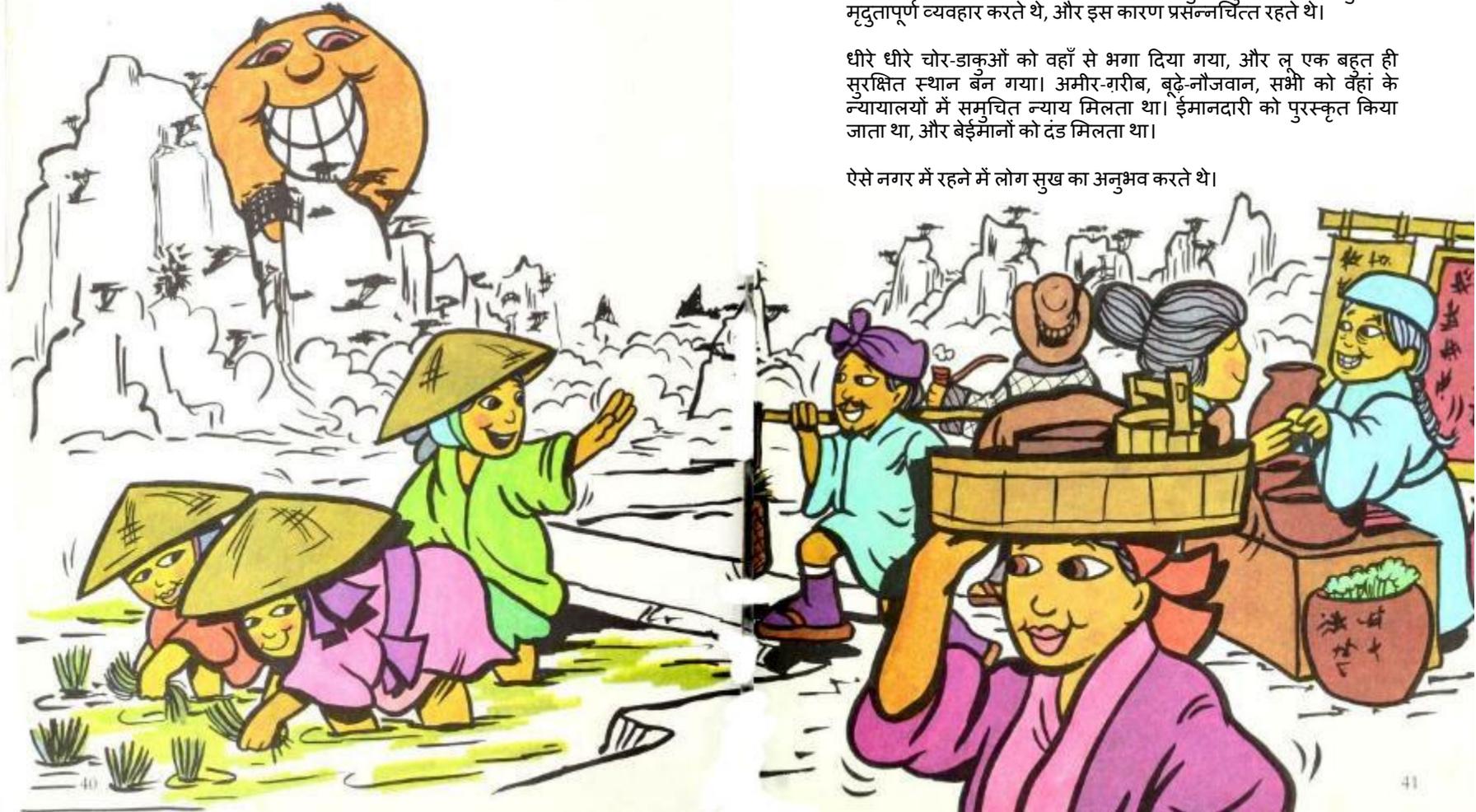
अक्सर लू के निवासी राह चलते रुक कर एक दूसरे से नगर की इस नई जीवन शैली के विषय में बातचीत करने लगते।

"कितना अद्भुत है यह," वे कहते। "जीवन कितना सुधर जाता है, जब हम सब एक दूसरे से सम्मानजनक व्यवहार करते हैं। कन्फ़्यूशियस हमारे शासक को कितनी अच्छी सीख दे रहा है। और शासक भी बहुत बुद्धिमान है, जो उसकी सलाह पर अमल करता है।"

और इस प्रकार तीन वर्ष तक लू में जन-जीवन बहुत सुखपूर्वक चला। लेकिन अन्य स्थानों पर लोग सुखी नहीं थे। लू के पडोसी राज्य ची का राजा न तो ईमानदार था, और न ही दयालु। वह किसानों पर अधिक कर लगा कर स्वयं तो बहुत धनी बन गया था, लेकिन किसानों को बदले में कुछ नहीं देता था।

"सावधान रहना," उस शासक के मित्र उससे कहते। "तुम्हारी प्रजा तुम्हारे खिलाफ बातें करने लगी है। वे चाहते हैं कि तुम भी लू के शासक जैसे बनो।"

ची का शासक झुंझला कर कहता,"मेरा अपने आप को बदलने का कोई इरादा नहीं है। मैं तो चाहता हूँ कि लू का शासक अपने तौर-तरीके बदले। और वह बदल भी लेगा अगर कन्फ़्यूशियस को वहां से हटा दिया जाये। सारी मुसीबत की जड़ वही है।"

और ची के शासक ने ऐसा करने का एक उपाय भी सोच निकाला।

उसने लू के शासक को ८५ सुन्दर नर्तकियां और १२५ शानदार घोड़े उपहार में भेजे। "यह मेरी ओर से एक भेंट है," उसने कहा, "तुम्हारे प्रति मेरे आदर और सराहना को व्यक्त करने के लिए।"

निश्चय ही, उसने ऐसा झूठ ही कहा था। उसका उद्देश्य था कि लू का शासक इन वस्तुओं के आनंद में मग्न हो जाए, और कन्फ़्यूशियस की बातों पर ध्यान न दे।

और उसकी यह कुटिल योजना सफल भी हो गई। लू का शासक अपने मनोरंजन में इतना व्यस्त हो गया, कि उसे अपनी जनता और कन्फ़्यूशियस का कोई ध्यान न रहा।

"अब तुम क्या करोगे?", साधु ने कन्फ़्यूशियस से पूछा। "शासक अब तुम्हारी एक नहीं सुनता। यहाँ तक कि वह तुमसे मिलना भी नहीं चाहता।"

कन्फ़्यूशियस ने एक ठंडी सांस ली, क्योंकि उसे इसका उत्तर पता था। "मैं किसी को बलपूर्वक तो बुद्धिमान नहीं बना सकता," उसने कहा। "हमको यह राज्य छोड़ना होगा।"
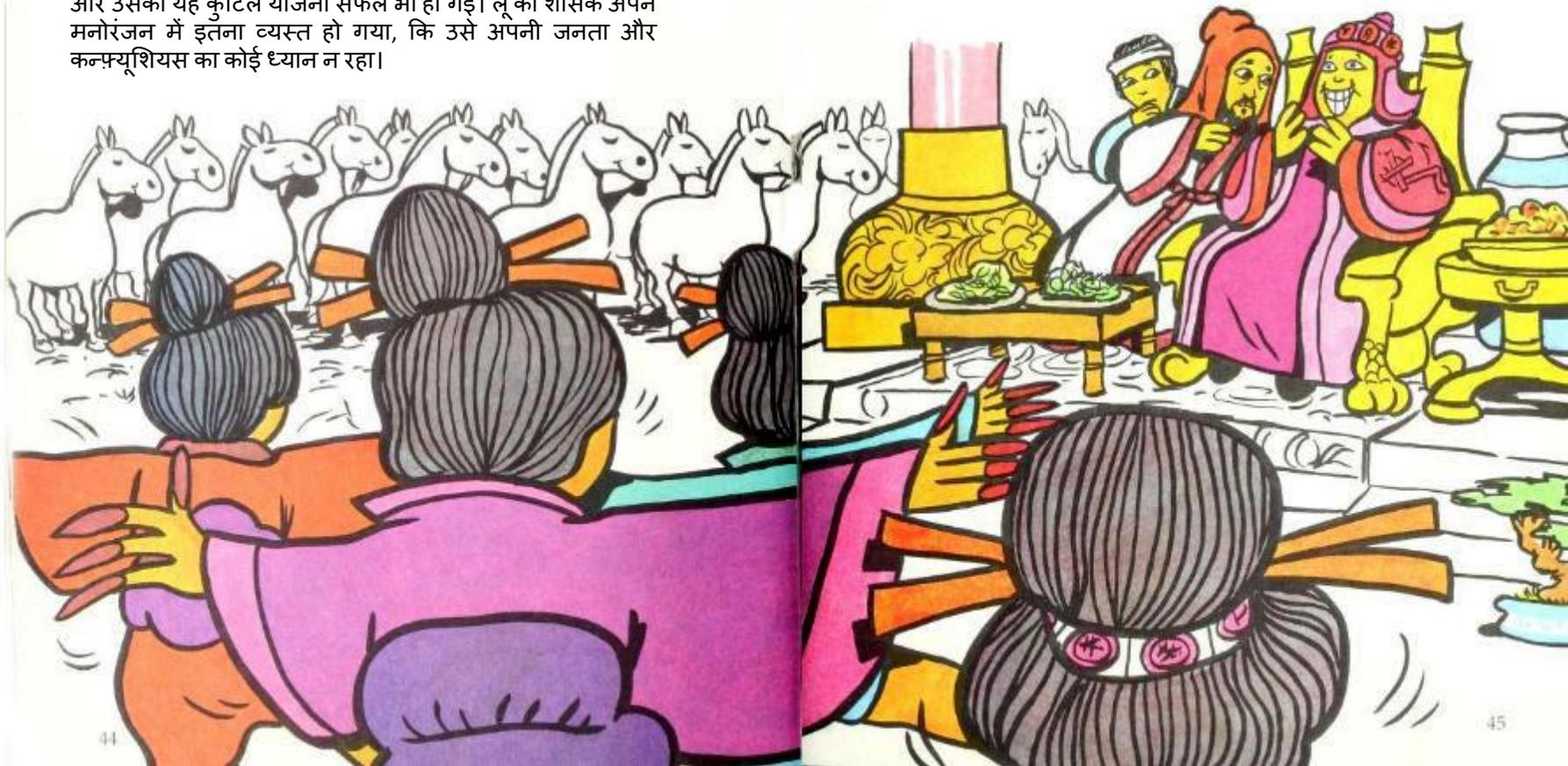
चुपचाप, कन्फ़्यूशियस ने लू के महल से प्रस्थान कर दिया। जाते जाते वह बार-बार पीछे मुड़ कर देख रहा था। उसे आशा थी कि शायद शासक उसके पीछे किसी हरकारे को भेजे। लेकिन कोई नहीं आया। लू का शासक ची के शासक से मिले शानदार तोहफों का आनंद लेने में व्यस्त था। उसे अपने सिवा किसी और की भावनाओं का कोई खयाल नहीं था।

कन्फ़्यूशियस ने आस-पास के अन्य राज्यों के विषय में सोचा। "शायद हमें वेई चले जाना चाहिए," उसने कहा। "या फिर शायद सुंग का शासक हमारा स्वागत करे।"

लेकिन जब कन्फ़्यूशियस और उसके अनुयायी देहाती इलाकों में भटक रहे थे, और यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि अब वे कहाँ जाएँ, उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो पाया कि कुछ सैनिक उनका पीछा कर रहे थे।
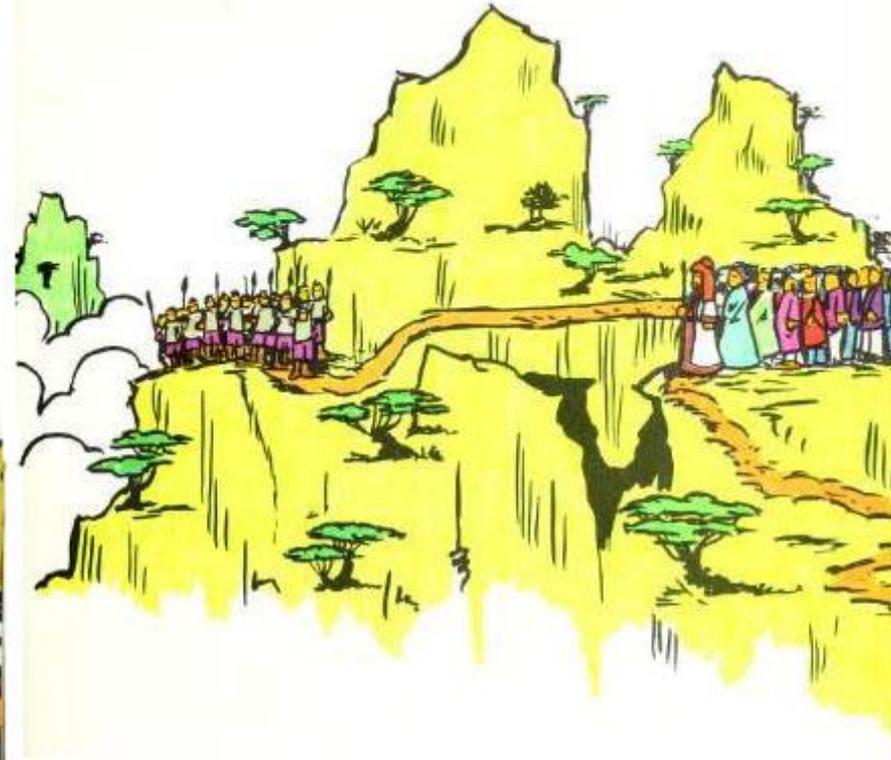
"यह तो ची के शासक की सेना है," साधु ने कहा। "वह तुमसे बहुत समय से घृणा करता है, क्योंकि तुम्हारा मानना है कि एक राजा को सदाचारी और न्यायशील होना चाहिए, जो कि वह बिलकुल नहीं है। उसे डर है कि तुम्हारे प्रभाव में आकर उसकी प्रजा उसके खिलाफ न उठ खड़ी हो। और मुझे डर है कि शायद उसके सैनिक अब तुम्हें ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे।"

"हो सकता है, कि ऐसा ही हो," कन्फ़्यूशियस ने कहा।

और फिर, क्योंकि बरसात होने लगी थी, कन्फ़्यूशियस ने एक विशाल वृक्ष के नीचे शरण ली, और प्रतीक्षा करने लगा।

उसके अनुयायी बहुत परेशान थे। उनमे से कुछ अपने शिक्षक के साथ रहना चाहते थे, जबकि अन्य वहां से भाग जाने में ही भलाई समझ रहे थे। "अगर हम रुके तो मारे जायेंगे," वे बोले। "एक सेना के सामने हम भला क्या कर सकते हैं?"

उन्हें परेशान देख कर कन्फ़्यूशियस ने अपने तीन प्रिय शिष्यों को अपने पास बुलाया।

"जब तुम यह देख सकते हो, कि तुम्हारे शिक्षक के पास शासकों जैसी शक्ति नहीं है, उसकी बात को कोई सुनने वाला नहीं है, और जल्दी ही शायद उसे मार डाला जाये, तो क्या तुम्हें लगता है कि वह बुद्धिमान व्यक्ति है?"

पहले दो शिष्य बड़े भयभीत और बदहवास थे।

"पता नहीं," उनमे से एक ने कहा।
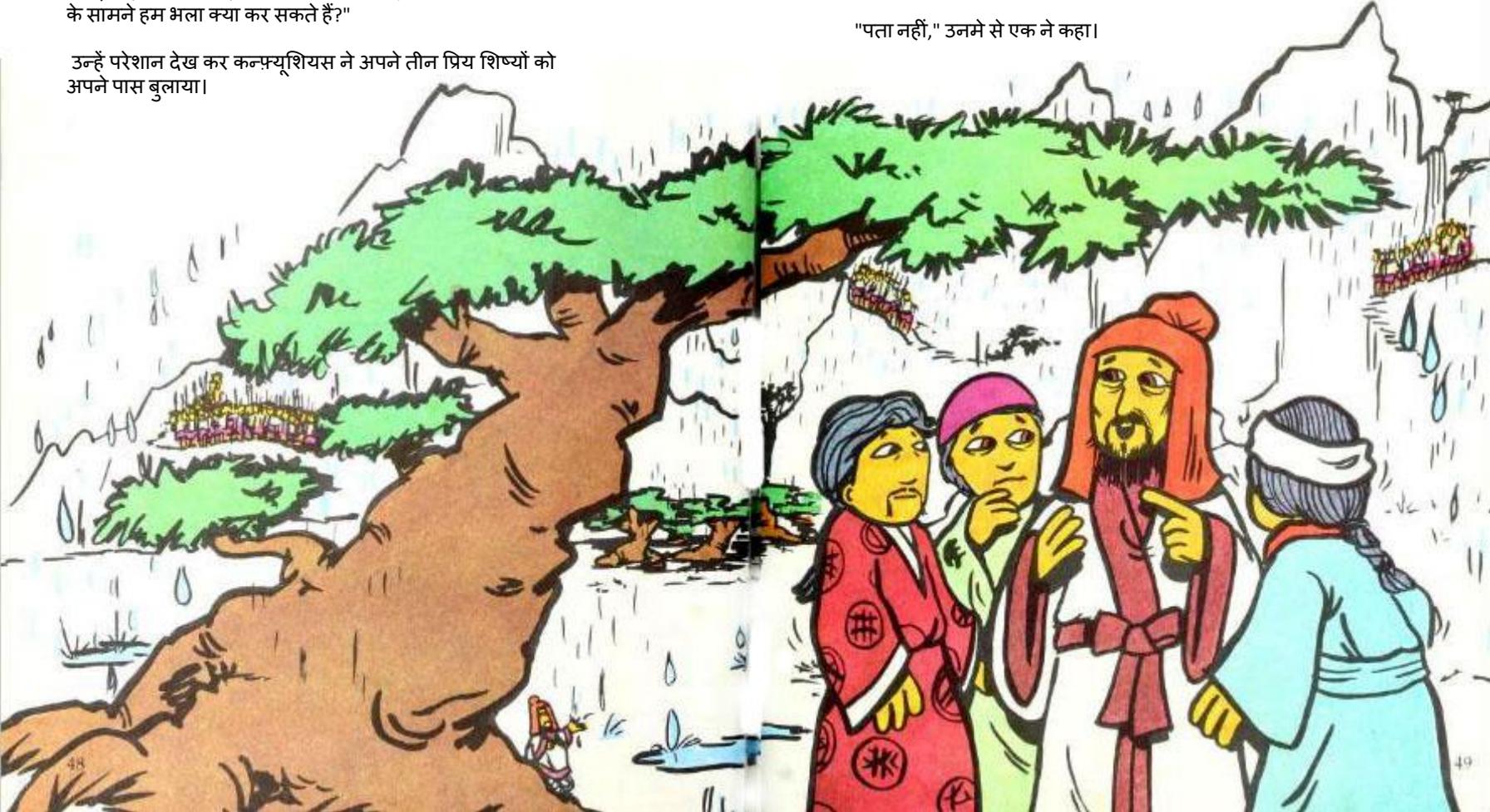
"मैं कह नहीं सकता," दूसरा बोला।

जानते हो तीसरे शिष्य ने क्या कहा ?

उसने बहुत आदरपूर्वक कन्फ़्यूशियस की ओर देखा। "आपका कार्य है सत्य का मार्ग दिखाना," वह बोला। "आपका स्वयं से और दूसरों के प्रति सत्यनिष्ठ होना बहुत आवश्यक है। आपको वही करना चाहिए जो आपको सही प्रतीत हो। यदि दूसरे लोग सत्य को स्वीकार नहीं करते, तो यह उनका ही दोष है। दूसरों की स्वीकृति पाने के लिए आप सत्य को बदल तो नहीं सकते। ऐसा करने से आप स्वयं ही असंतुष्ट हो जायेंगे।"

कन्फ़्यूशियस ने मुस्कुरा कर कहा, "तुमने अपना पाठ अच्छी तरह सीखा है। बहुत अच्छी तरह।"

फिर,बरसात होती रही, और कन्फ़्यूशियस पेड़ के नीचे बैठा सारंगी बजाता रहा, और गाना गाता रहा। उसे मालूम था कि खतरा उसके सर पर मंडरा रहा था, लेकिन वह फिर भी प्रसन्नचित्त था। वह जानता था कि वह एक भला और ईमानदार व्यक्ति था। अगर वे सैनिक उसे मार भी दें, तो भी वे इस सत्य को नहीं मिटा सकते।

परन्तु वे सैनिक कन्फ़्यूशियस को मार नहीं पाए, क्योंकि उसके बहुत से शुभचिंतक मित्र थे। कन्फ़्यूशियस का एक अनुयायी दौड़ कर ऐसे ही एक मित्र से सहायता मांगने गया।

वह मित्र एक शक्तिशाली व्यक्ति था और उसके पास भी अपने सैनिक थे। जब उसे पता चला कि एक शत्रु सेना कन्फ़्यूशियस को मारना चाहती है, तो उसने अपने सेनानियों को बुलाया, और उन्हें इस महान शिक्षक की रक्षा के लिए भेजा।

जब दुष्ट राजा की सेना ने इन सेनानियों को वहां आते देखा, वे भाग खड़े हुए। वे कन्फ़्यूशियस को मारना तो चाहते थे, लेकिन बराबरी के युद्ध के लिए तैयार नहीं थे।

कुछ लोग समझते हैं कि कन्फ़्यूशियस का व्यवहार सदा ही आदर्श होता था, या वह हमेशा ही विनम्र और निष्कपट रहता था। लेकिन कन्फ़्यूशियस और साधु को पता था कि ऐसा नहीं था। कन्फ़्यूशियस भी हम सब की तरह ही था। कभी कभी वह भी गलतियां करता था।

एक बार, जब वह जंगल में एक झोंपड़ी में रहता था, एक व्यक्ति उससे मिलने आया, जिसे वह बिलकुल पसंद नहीं करता था।

"मैं इस आदमी की शक्ल भी देखना नहीं चाहता," कन्फ़्यूशियस ने कहा। "असल में मुझे यह इतना नापसंद है, कि मैं इसके साथ बिलकुल बेरुखी से पेश आऊंगा।"

कन्फ़्यूशियस ने अपने एक शिष्य से कहा कि वह उस आदमी से कह दे कि वह घर पर नहीं है। ऐसा करके वह अपनी झोंपड़ी में बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से गाने-बजाने लगा, जिससे उस आदमी तो पता चल जाए कि वह घर पर ही है।

"तुमने झूठ बोला," साधु ने कहा, "और उस व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुंचाई।"

कन्फ़्यूशियस जानता था कि यह सच है। वह इस विषय में जितना सोचता, उसका मन उतना ही विचलित होता जाता।

"कोई बात नहीं," साधु ने कहा। "चिंता करने से कोई लाभ नहीं। बस अपनी गलतियों से सबक लेने की कोशिश करो।"

जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ी, कन्फ़्यूशियस का ज्ञान बढ़ता ही गया। उसने पढ़ कर, देख कर, और सुन कर बहुत कुछ सीखा। उसने अपनी गलतियों से भी सीखा।

चौदह वर्ष तक पूरे चीन में भ्रमण करने के बाद उसे फिर अपने राज्य लू में वापस बुलाया गया। एक बार फिर उसे राज दरबार में स्थान दिया गया, और शासक उसकी सलाह पर अमल करने लगा।

अब तक कन्फ़्यूशियस स्वयं भी साधु जैसा ही दिखने लगा था। और अगर साधु अब भी उसके अंतर्मन में कुछ फुसफुसाता था, तो किसी को इस इस बारे में कुछ पता नहीं था। असल में कन्फ़्यूशियस अब स्वयं ही एक साधु बन चुका था।

"मैंने पुस्तकें पढ़ कर बहुत कुछ सीखा है," कन्फ़्यूशियस ने साधु से कहा। "शायद अब मुझमें इतनी बुद्धिमत्ता आ गई है, कि मुझे स्वयं भी एक पुस्तक लिखनी चाहिए।"

"मैं तुमसे सहमत हूँ," साधु ने कहा। "अपनी पुस्तक का शीर्षक क्या रखोगे?"

"शीर्षक होगा वसंत और पतझड़," कन्फ़्यूशियस ने उत्तर दिया। "यह लू राज्य के इतिहास की पुस्तक होगी। मैं इस पुस्तक में लिखूंगा कि पिछले २५० वर्षों में यहाँ क्या-कुछ हुआ है। मैं बताऊंगा कि क्या उचित और विवेकपूर्ण था, और क्या अनुचित और अविवेकपूर्ण, जिससे कि लोग इस पुस्तक को पढ़ कर सीख ले सकें।"

"लेकिन उसके ज्ञान का भंडार तो इतना विशाल है," कन्फ़्यूशियस के अनुयायियों ने कहा। "वह अकेला सब कुछ कैसे लिख पायेगा। हमें इस कार्य में सहायता करनी चाहिए।"

इस प्रकार, कन्फ़्यूशियस के छात्र उसकी बातों को ध्यान से सुनते, और उसके अधिकांश वचनों को लिपिबद्ध कर लेते। २५०० वर्ष पूर्व के इस शिक्षक के विषय में आज हम जो कुछ भी जानते हैं, उसके छात्रों द्वारा लिखी गई बातों से ही जानते हैं।

एक बात जो उन्होंने लिखी वह यह थी। जब कोई व्यक्ति स्वयं के प्रति निष्ठापूर्ण होता है, तो उसमें आत्मसम्मान का उदय होता है। और जब समाज के अधिकांश लोग ऐसा करते हैं तो एक बेहतर संसार का निर्माण होता है।

कन्फ़्यूशियस के समय की अपेक्षा चीन में बहुत से बदलाव आ गए हैं। आज वहां एक आधुनिक युग है। कई मायनों में लोग भी अलग हैं। लेकिन कई प्रकार वे अब भी पहले जैसे हैं। वे अब भी कन्फ़्यूशियस की बातें करते है, जबकि उसे गुज़रे बहुत वर्ष बीत चुके हैं। शायद वे समझते हैं कि उसने जो कुछ कहा वह उचित था।

क्या तुम्हें भी लगता है कि कन्फ़्यूशियस सही था? क्या तुम्हें लगता है कि स्वयं से और दूसरों के प्रति ईमानदार बन कर हममें आत्मसम्मान जागता है, और हम अच्छा महसूस करते हैं?

तुम्हारे जीवन में ईमानदारी का महत्त्व कितना है, इसका निर्णय केवल तुम स्वयं ही कर सकते हो। लेकिन तुम जो भी निर्णय करो, हमें आशा है कि उससे तुम स्वयं के प्रति अच्छा महसूस करोगे।

ठीक वैसे ही, जैसे कि हमारे मित्र कन्फ़्यूशियस ने किया।

कुछ ऐतिहासिक तथ्य

कन्फ़्यूशियस का जन्म २५०० वर्ष से भी पहले लू राज्य में हुआ था, जो कि अब चीन के शानतुंग प्रान्त का हिस्सा है। वह त्साओ जिले के प्रधान शुह-लिआंग हीह का इकलौता पुत्र था। जब कन्फ़्यूशियस का जन्म हुआ, शुह-लिआंग की आयु सत्तर वर्ष से भी अधिक थी।

कई विद्वान और इतिहासकार कन्फ़्यूशियस को एक पवित्र महापुरुष मानते हैं। लेकिन इस बात में संदेह है कि कन्फ़्यूशियस पारम्परिक रूप से बहुत धार्मिक था। बल्कि उसका मानना था कि जीवन का उद्देश्य है आतंरिक उत्कृष्टता प्राप्त करना। उसने मुख्य रूप से चार विषयों पर शिक्षा दी : साहित्य, लोक-व्यवहार, आतंरिक सत्यनिष्ठा, और सामाजिक रिश्तों में ईमानदारी।

कन्फ़्यूशियस की शिक्षा का निचोड़ था "शू", यानि सर्व-विदित स्वर्णिम नियम, "दूसरों के प्रति कभी ऐसा व्यवहार मत करो जो तुम स्वयं के लिए नहीं चाहते"।

अपने अनेक वर्षों के अध्ययन और शिक्षण के दौरान कन्फ़्यूशियस ने पूरे चीन में भ्रमण किया। जब वह ५२ वर्ष का था, उसे अपने राज्य लू में बुलाया गया, और चुंग-तू का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उसके समाज-सुधार के कार्य आज के मापदंड के अनुसार भी बहुत उच्च कोटि के थे। न केवल उसने गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था की, उसने नौजवानों और वृद्धों को उनकी आयु के अनुरूप उचित भोजन दिलवाया। उसने श्रमिकों को व्यवस्थित किया, और कमज़ोर श्रमिकों को आसान कार्य दिलाये, और शक्तिशालियों को मुश्किल। उसकी देख-रेख में संचार व्यवस्था में सुधार हुआ, सड़कों और पुलों की मरम्मत की गई, और पर्वतों में रहने वाले चोर-डाकुओं का सफाया हुआ। लोगों को अत्याचार से मुक्ति मिली, और कानून की नज़रों में सब बराबर थे।

जैसे-जैसे कन्फ़्यूशियस की ख्याति बढ़ी, उससे शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक लोगों की संख्या बढ़ने लगी। एक समय वह लगभग ३००० छात्रों को इतिहास, कला, संगीत और काव्यशास्त्र की शिक्षा दे रहा था। लेकिन छात्रों के मूल्याङ्कन का उसका मापदंड इतना ऊँचा था कि उसके अनुसार केवल ७२ छात्र ही ऐसे थे जिन्होंने इन सभी विषयों में दक्षता प्राप्त कर ली हो।

कन्फ़्यूशियस का दृढ विश्वास था कि एक शासक का सर्वप्रथम कर्त्तव्य था सदाचारी बनना, और इससे ही उसकी प्रजा में समरसता बनी रह सकती थी। लेकिन, चुंग-तू के राज्यपाल के पद के अतिरिक्त कन्फ़्यूशियस को कभी ऐसा उच्च पद प्राप्त नहीं हुआ जिसके माध्यम से वह नैतिक शासन-पद्धति के अपने विचारों को व्यावहारिक रूप से लागू कर पाता। लेकिन जैसे उसकी उम्र बढ़ी, उसे इस बात से बहुत संतोष और आनंद मिला कि उसके अनेक छात्र, जिन्हें उसने नैतिक सिद्धांतों की शिक्षा दी थे, बहुत ऊँचे और शक्तिशाली पदों पर पहुंचे।

४७८ ईसापूर्व में ७३ वर्ष की अवस्था में कन्फ़्यूशियस का देहांत हो गया। उसे लू राज्य में सज़े नदी के तट पर दफनाया गया। १०० से भी अधिक परिवारों ने यह निश्चय किया कि वे इस महान शिक्षक के समीप रहना चाहते थे, और उन्होंने उसकी समाधि के आसपास ही अपने घर बना लिए। लोग वहां अध्ययन-मनन करने, और एक-दूसरे से चर्चा करने के लिए आते। २०० वर्षों से भी अधिक समय तक कन्फ़्यूशियस के छात्रों के परिवार वहां बसे रहे। आज भी इस क्षेत्र को कुंगली चीन, यानी दार्शनिक कुंग का गांव कहा जाता है।

लेकिन कुंग का गांव क्यों? क्योंकि इस महान दार्शनिक का वास्तविक नाम कुंग था। लैटिन और अंग्रेजी भाषाओँ में बदल कर यह कन्फ़्यूशियस हो गया, जिसका मूल है कुंग-फू-त्ज़ू अर्थात दार्शनिक कुंग।

बीते दो हज़ार वर्षों में चीन में अनेकों महान दार्शनिक हुए हैं, लेकिन किसी ने भी विश्व पर कन्फ़्यूशियस के जैसा प्रभाव नहीं छोड़ा। हालाँकि वह धार्मिक नहीं था, लेकिन नैतिकता सम्बन्धी उसके विचारों ने स्वयं ही एक धर्म का स्वरूप ले लिया। इसे कंफ्यूशियनिस्म का नाम दिया गया, और चीन में यह एकमात्र राज्य-धर्म रहा है। और इस व्यक्ति को, जिसने स्वयं को सदा एक साधारण त्रुटिपूर्ण मानव ही माना, लगभग एक ईश्वर का स्थान प्राप्त है। निश्चय ही उसे यह जान कर गर्व और संतोष अनुभव होगा कि उसकी शिक्षाओं को विश्व भर में आदर दिया जाता है। लेकिन शायद स्वयं को ईश्वर का स्थान दिया जाना उसे बिलकुल उचित नहीं लगेगा।